Regarding increasing human-animal conflict in Lakhimpur Kheri, Uttar Pradesh

श्री उत्कर्ष वर्मा मधुर (खीरी) : अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर आकृष्ट करना चाहता हूं । भारत सरकार की राष्ट्रीय टाइगर कन्जरवेशन अथॉरिटी ने माना है कि देश के कुल टाइगरों की 30 परसेंट संख्या नोटीफाइड वन क्षेत्र के बाहर है । मेरे जनपद खीरी व पड़ोस के जनपद बहराइच और पीलीभीत में पिछले चार वर्षों में 65 से ज्यादा मनुष्यों की वन प्राणियों द्वारा जान जा चुकी है । गन्ने की दस महीने की फसल में सात-आठ महीने में गन्ना काफी बड़ा हो जाता है, जिसे बाघ स्वाभाविक रूप से रहने योग्य मानता है । दुधवा के जंगलों में वर्ष 2008 में आई बाढ़ ने बायो डायवर्सिटी बिगाड़ दी है, जिससे छोटी घास खत्म हो गयी है । इसके कारण छोटे जानवर जंगल से बाहर आये और उनके पीछे बाघ, तेंदुए और अन्य जंगली जानवर शिकार के लिए बाहर आ गए, जहां उनके लिए आवारा पशु आसानी से उपलब्ध हैं । बाघिन गन्ने के खेत में शावकों को जन्म दे रही है और वापस जंगल नहीं जा रही है । किसान और मजदूरों को खेतों में काम करने के लिए दहशत और जान का खतरा बना हुआ है ।

मैं मांग करता हूं कि अविलम्ब इस समस्या के समाधान के लिए विशेषज्ञों की टीम बनाकर मानव-वन प्राणी टकराव रोकें । वन प्राणियों से मृत्यु होने पर मुआवजे की राशि बढ़ाकर कम से 25 लाख की जाए, पालतू पशुओं व फसलों के नुकसान की क्षतिपूर्ति की जाए और वन प्राणियों को पकड़ कर वापस जंगल में छोड़ा जाए । धन्यवाद ।